आठवें दशक की हिन्दी कविता के संदर्भ में वीरेन डंगवाल के जीवन–विवेक और काव्य–दृष्टि का अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़ आगरा की पी–एच.डी. (हिन्दी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

रूपरेखा एवं उद्देश्य

2015

निर्देशक

डॉ. प्रेमषंकर सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर

अनुसंधित्सु

ऋचा वर्मा

हिन्दी विभागाध्यक्ष

प्रो. शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख

प्रो. रागिनी रॉय

हिन्दी विभाग, कला संकाय

डी.ई.आई. (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा–282005

आठवें दशक की हिन्दी कविता के संदर्भ में वीरेन डंगवाल के जीवन–विवेक और काव्य–दृष्टि का अध्ययन

विषय प्रवेश

वीरेन डंगवाल की गणना समकालीन कविता के सषक्त कवियों में की जाती है। सहज बोलचाल की भाशा में अपनी अनुभूतियों को प्रभावषाली रूप में व्यक्त करने वाले वीरेन जी समकालीन हिन्दी कविता में लोकप्रियता एवं समर्पण दोनों ही लिहाज़ से अपना अलग स्थान रखते हैं। भावुक एवं कल्पनाषील कवि वीरेन डंगवाल का जन्म 5 अगस्त 1947 को कीर्तिनगर, टिहरी, गढ़वाल में हुआ था। वीरेन डंगवाल अपने पिता श्री रघुनन्दन प्रसाद डंगवाल की सरकारी नौकरी एवं तबादलों के कारण किसी एक जगह से बँध कर नहीं रहे। मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, कानपुर, बरेली, नैनीताल और अन्त में इलाहबाद विष्वविद्यालय से षिक्षा प्राप्त करने वाले वीरेन की कविताओं में भी उनके उन्मुक्त एवं प्रखर व्यक्तित्व के दर्षन होते हैं। विभिन्न स्थानों पर रहने के कारण उनकी कविता में अनेक स्मृतियों का जिक्र है जिसमें कहीं नन्हा पीला पहाड़ी फूल है, कहीं बसन्त के विनम्र काँटें हैं, कहीं पुराना तोता है, कहीं बकरियाँ, कहीं साईकिल है, कहीं रद्‌दी बेचने वाला लड़का है। मल्लाह, गाय, कमीज, ऊँट, पपीता, इमली, समोसे जैसे कविता करने के विशय हैं तो साथ ही अभिव्यक्ति की गहरी संवेदनाएँ भी हैं। इन संवेदनाओं के प्रति लगाव और एक नए डरावने समय में आषंकित मन की सामाजिक चिन्ता कवि के व्यक्तित्व की अनेक विषेशताओं को उजागर करने वाली है। इन सबके बीच सबसे बढ़कर जो चीज़ है वह अपने रचना संसार के प्रति गहन आत्मीयता है। वीरेन जी ने कविता लेखन का आरम्भ बाईस साल की उम्र में ही कर दिया था। लेखन की गहराई और संवेदनाओं

से लबरेज कवि ने कागजों पर अपने विचारों और अनुभूतियों को बखूबी प्रस्तुत किया किन्तु यह षायद उनकी सादगी थी या फिर साहित्य जगत में जिसे उनकी लापरवाही कहा जाता है, उन्होने अपने लेखन को दूसरों के सामने प्रकट करने में उतनी रूचि नहीं दिखाई। दूसरे षब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि अपने विचारों की उड़ान भरने में उन्होंने कोई कमी न की पर उन्हें इस बात की कोई अभिलाशा न थी कि उनके यह सभी विचार एवं कल्पनाएँ दूसरों के सामने प्रकट हों। अतः वे अपने लेखन के प्रति सदैव निर्मोही बने रहे और यही कारण है कि 44 साल की कवि उम्र में उनका प्रथम काव्य संग्रह ***'इसी दुनिया में'****(1991) के नाम से उन्हीं के कवि मित्र नीलाभ द्वारा 'नीलाभ प्रकाषन' से छापा गया।*

अपने हम उम्रों में खुद के लिए सबसे कठिन उत्तरदायित्वों के निर्वहन का संकल्प लेने वाले कवि वीरेन षुरूआत से जानते थे कि पीठ–खुजाऊ मण्डलियों के कारण उनसे बाहर दरअसल कविता किस गति को प्राप्त हो रही है कवि ने इसे एक कविता में इस प्रकार व्यक्त किया है–

कवि का सौभाग्य है पढ़ लिया जाना
जैसे खा लिया जाना
अमरूद का सौभाग्य है
हाँ, स्वाद भी अच्छा है और तासीर में भी।

वीरेन की रूचि षुरूआत से ही कविताओं एवं कहानियों में रही जिसमें काव्य विधा पर लेखन करना उन्हें सर्वाधिक प्रिय था। आलोचक रामस्वरूप चतुर्वेदी के निर्देषन में इलाहबाद विष्वविद्यालय से षमषेर बहादुर की कविताओं पर कवि वीरेन के द्वारा किया गया षोध कार्य भी कविताओं में उनकी विषेश रूचि को दर्षाता है। अतः हिन्दी के रचना संसार में वीरेन मूलतः एक सषक्त कवि के रूप में अपनी

पहचान बनाए हुए हैं। इसके अलावा पत्रकारिता से उनका गहरा रिष्ता है और अरसे से वे दैनिक ***'अमर उजाला'*** *के सम्पादकीय सलाहकार भी हैं।*

अब तक वीरेन डंगवाल के तीन कविता संग्रह प्रकाषित हो चुके हैं जिनका क्रम इस प्रकार है– ***इसी दुनिया में (1991), दुश्चक्र में स्रष्टा (2002), स्याही ताल (2009)।*** *लगातार कविता लेखन में संलग्न रहने के बावजूद उनके संग्रहों के प्रकाषन में लगभग एक दषक का समय बीत जाता है जो इस बात का परिचायक है कि कवि वीरेन का अपनी कविताओं के साथ सम्बन्ध बेहद संयम एवं परफैक्षन वाला है। उनकी कविताएँ प्रासंगिक हैं एवं समाज को दिषा देने में समर्थ है। पिछले संग्रह के प्रकाषन के बाद से अनेक पत्र पत्रिकाओं में उनकी सैकड़ों कविताएँ प्रकाषित होती रही हैं। इन कविताओं के संकलन से निःसन्देह तीन और संग्रह आसानी से बन सकते हैं। प्रस्तुत षोधकार्य में इन कविताओं का अध्ययन भी सम्मिलित है।*

कविता के लेखन के सन्दर्भ में वीरेन जी का दृष्टिकोण सदैव ही बड़ी और महान कविता रचने से ज्यादा बड़ी जमात की बात को कहने की ओर रहा है। भले ही उनकी कविता का कलेवर अपेक्षाकृत छोटा ही क्यों न हो किन्तु उसका प्रभाव कटु–तिक्त–बीज की तरह होता है। उनकी कविता के प्रतीक अन्य कविताओं में प्रयुक्त प्रतीकों से भिन्न है। उनके बिम्बों का ग्रहण जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से हुआ है जो सर्वथा नवीन है। वीरेन जी बेजोड़ शिल्प में छिपी हुई हवा को पहचानकर उसे अपनी तत्सम–तद्भव–क्लासिक–देशज–व्यंग्य–विनोद–वक्रोक्ति की बांकी तिरछी भंगिमाओं के मिश्रण से बनी उस भाषा में दर्ज करते हैं, जो हिन्दी कविता में उन्हें एक अलग से रास्ते का चमकता हुआ कवि बनाती है। वीरेन जी की समस्त कविताएँ बहुत अलग, अनूठे एवं बुनियादी किस्म के यथार्थ से परिपूर्ण हैं उनकी कविताओं में उनकी बसाहट का स्थान भूगोल खुलकर बोलता गूँजता है। कविता में

स्थानीय भूमि की सुगंध का जिक्र ऐसे समय में और अधिक आवष्यक हो जाता है जब जीवन में स्थानीयता के उजाड़ का दौर चल रहा हो जिसके फलस्वरूप कविता में उसकी उपस्थिति अनिवार्य सी हो जाती है।

विषय का अनावरण

हिन्दी काव्यान्दोलन (स्वतंत्रता के बाद) के इतिहास में नई कविता आन्दोलन और अकविता आन्दोलन सबसे प्रमुख हैं। हिन्दी की आठवें दशक की कविता इन दोनों काव्यान्दोलनों से प्रभाव एवं प्रेरणा ग्रहण करते हुए भी सापेक्षित अर्थों में इन काव्यान्दोलनों के भीतर निहित काव्य दृष्टियों का विरोध करती है और नई काव्य दृष्टि का प्रवाह भी। शमशेर बहादुर, मुक्तिबोध, रघुवीर सहाय जैसे नई कविता के कवियों और राजकमल चौधरी, सुदामा पाण्डेय धूमिल, लीलाधर जगूड़ी जैसे कवियों के प्रभाव आठवें दशक की कविता पर स्पष्ट देखे जा सकते हैं। वीरेन डंगवाल की विशिष्टता इस बात में निहित है कि जहाँ एक तरफ मुक्तिबोध और शमशेर से चेतना की विराटता और शिल्प की मासूमियत ग्रहण करते हैं वहीं रघुवीर सहाय एवं धूमिल से ठेठ और तीखे व्यंग्य पैदा करने वाले काव्य सन्दर्भ रचते हैं।

उपर्युक्त विषय का चयन करते समय अभ्यर्थी के दिमाग़ में यह बात भी उपस्थित है कि कवि दृष्टि के निर्माण में जीवनानुभव की महती भूमिका होती है। कवि की जीवनदृष्टि ही उसे विश्वदृष्टि के चयन की गुंजाइश देती है। इसीलिए स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कविता के सन्दर्भ में आठवें और नवें दशक की हिन्दी कविता आन्दोलन के भीतर वीरेन डंगवाल की विशिष्टता के निरूपण हेतु यह शोधकार्य आवश्यक है।

साहित्य सर्वेक्षण एवं विषय की मौलिकता

साहित्य सर्वेक्षण के दौरान मैंने भिन्न–भिन्न संस्थानों में प्रस्तुत विषय की खोज हेतु आँकड़ों का संकलन किया । इस दौरान प्रस्तुत विशय के सन्दर्भ में कोई भी षोध कार्य मुझे प्राप्त नहीं हुआ । दिल्ली विश्वविद्यालय में केवल एक एम.फिल. शोध कार्य **'भूमण्डलीकरण और दुश्चक्र में स्रष्टा'** विषय पर अवष्य प्राप्त हुआ है। आश्चर्यजनक बात है कि विभिन्न विद्यालयों के पाठ्यक्रम में वीरेन की कविताओं को पढ़ाया जाने के बावजूद कवि की कविताओं पर पी–एच०डी० हेतु अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। एम०ए० में अपने लघु शोध कार्य के समय वीरेन डंगवाल के कविता संग्रह **'दुश्चक्र में स्रष्टा की कविताओं में समकालीन बोध का अनुभूतिपरक विश्लेषण'** विषय पर कार्य करना अत्यन्त प्रभावी रहा और इसी से उत्साहित होकर मैंने पी–एच०डी० हेतु **'आठवें दशक की हिन्दी कविता के संदर्भ में वीरेन डंगवाल के जीवन–विवेक और काव्य–दृष्टि का अध्ययन'** विषय पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया। प्रस्तुत विषय के सन्दर्भ में स्वतंत्र रूप से विवेचना, विश्लेषण का ठोस कार्य तुलनात्मक रूप में कुछेक पुस्तक समीक्षाओं तक ही सीमित है। अतएव प्रस्तुत विशय पर किया जाने वाला शोध कार्य सर्वथा मौलिक होगा यह स्पष्ट है।

शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य

इस शोध प्रबन्ध का उद्देश्य हिन्दी कविता के इतिहास में आठवें दशक की कविता का वैशिष्ट्य एवं उसमें कवि वीरेन डंगवाल का स्थान आंकलन एवं मूल्यांकन करना है। आठवें दशक में भारतीय समाज एवं राजनीति में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखायी देते हैं। आजादी के बाद की 'मोहभंग की स्थिति' एवं 'आपातकाल

का धब्बा' दोनों परिस्थितियों का भारतीय जन मानस पर असर दिखायी देता है। आठवां दशक शुरू होने के कुछ ही दिनों बाद भूमण्डलीकरण, उदारीकरण की पृष्ठभूमि तैयार होने लगी थी। इसके अलावा साम्प्रदायिक उन्माद भी दिखायी देने लगा था। कुछ सालों बाद भारतीय इतिहास की दो प्रमुख दुर्घटनाएँ बाबरी मस्ज़िद का विध्वंस एवं आरक्षण विरोधी आन्दोलन घटित होती हैं। जन आन्दोलन एवं सामाजिक परिवर्तन की लड़ाई लड़ने वालों को सोवियत विघटन से गहरा आघात लगा। इन सभी घटनाओं की अभिव्यक्ति आठवें दशक और उसके बाद के समय में प्रमुख रूप से हुयी। इन प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति में वीरेन डंगवाल की कविता का विश्लेषण करना ही इस शोधकार्य का उद्‌देश्य होगा।

आज के सामाजिक जीवन की विसंगतियों, तनावों, अन्तर्द्वन्द्वों को नए तरीके से अभिव्यक्त करने में वीरेन डंगवाल की कविता में प्रयुक्त नए बिम्ब, प्रतीक एवं भाषायी जादूगरी का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण करते हुए भाषा की सशक्ता, सार्थकता, सम्प्रेषणीयता पर पूर्ण विचार करने का उद्‌देश्य रहेगा।

प्रस्तुत अध्ययन को छः अध्यायों में विभाजित किया है और उपसंहार के रूप में अध्ययन का निष्कर्ष एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता प्रस्तुत की जायेगी। अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची संलग्न है।

शोधार्थिनी

ऋचा वर्मा

आठवें दशक की हिन्दी कविता के संदर्भ में वीरेन डंगवाल के जीवन–विवेक और काव्य–दृष्टि का अध्ययन

अध्याय–1 स्वाधीनता पश्चात आठवें दशक की हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि

- *नई कविता*
- *अकविता*
- *साठोत्तरी हिन्दी कविता*
- *प्रमुख काव्यांदोलनों का आठवें दशक की कविता से अन्तर्सम्बन्ध*

अध्याय–2 : आठवें दशक की हिन्दी कविता और वीरेन डंगवाल

- *आठवें दशक की हिन्दी कविता का देशकाल*
- *आठवें दशक की हिन्दी कविता का स्वरूप एवं उसकी वैचारिक स्थिति*
- *सामाजिक–राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य तथा आठवें दशक के हिन्दी कवियों का वैशिष्ट्य*
- *आठवें दशक की हिन्दी कविता और वीरेन डंगवाल की कविता*

अध्याय–3 :वीरेन डंगवाल : जीवन विवेक और काव्य दृष्टि की निर्मिति

- *वीरेन डंगवाल का जीवन एवं रचनात्मकता*

* *रचनात्मकता और चिंतन के स्रोत*

  क. विचारधारात्मक स्रोत

  ख. सामाजिक और सांस्कृतिक स्रोत

  ग. साहित्यिक स्रोत

अध्याय–4 : वीरेन डंगवाल की कविता : जीवन–विवेक और काव्य–दृष्टि का अन्तर्सम्बन्ध

* *कविता और कवि जीवन : इतने भले नहीं बन जाना साथी*
* *जीवन–दृश्टि एवम काव्य–दृश्टि : विनम्र गर्वीले चेहरे और नगण्यता के गुणगान का कवि*
* *वर्तमान संदर्भ में उनके जीवन–विवेक एवं काव्य–दृश्टि का महत्व : मैंने चुना एक अलग रास्ता*

अध्याय–5 : कविता की राजनीति और वीरेन डंगवाल

* *भूमंडलीकरण और कविता*
* *सांप्रदायिकता और कविता*
* *मार्क्सवाद और कविता*
* *जनांदोलन और कविता*

अध्याय–6 : वीरेन डंगवाल का काव्य वैशिष्ट्य एवं भाषा

* *अन्य समकालीन कवि और वीरेन डंगवाल का रचना वैशिष्ट्य*

- *कथ्य की नवीनता, कविता के नए मुहावरे की खोज, काव्य भाषा, शिल्प विधान*

उपसंहार

परिशिष्ट

- *आधार ग्रन्थ*
- *षब्दकोष*
- *विष्वकोष*
- *सन्दर्भग्रन्थ*
- *पत्र–पत्रिकाएँ*
- *साक्षात्कार*
- *प्रष्नावली*
- *इंटरनेट*

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ

क्र० सं०	लेखक	पुस्तक	प्रकाशन	संस्करण
1.	वीरेन डंगवाल	इसी दुनिया में	नीलाभ प्रकाशन	प्रथम संस्करण

				1991
2.	वीरेन डंगवाल	दुश्चक्र में स्रष्टा	राजकमल प्रकाशन	प्रथम संस्करण 2002
3.	वीरेन डंगवाल	स्याही ताल	अंतिका प्रकाशन	प्रथम संस्करण 2009

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्र०स०	पुस्तक	लेखक	प्रकाशन	संस्करण
1.	**मुक्तिबोध** कविता और जीवन विवेक	चन्द्रकान्त देवताले	राधाकृश्ण प्रकाषन	पहला संस्करण 2003
2.	नई कविता और अस्तित्ववाद	रामविलास षर्मा	राजकमल प्रकाषन	पहला छात्र संस्करण 1993, आवृत्ति 2010
3.	कविता के नए प्रतिमान	नामवर सिंह	राजकमल प्रकाषन	पाँचवी आवृत्ति 2000
4.	कवि का अकेलापन	मंगलेश डबराल	राधाकृष्ण प्रकाशन	पहला संस्करण 2008
5.	समकालीन कविता का व्याकरण	परमानंद श्रीवास्तव	शुभदा प्रकाशन	प्रथम संस्करण 1980
6.	समकालीन	नन्द किशोर नवल	राजकमल	प्रथम संस्करण

	काव्य यात्रा		प्रकाशन	2004
7.	एक कवि की नोटबुक	राजेश जोशी	राजकमल प्रकाशन	पहला संस्करण 2004
8.	एक कवि की दूसरी नोटबुक समकालीनता और साहित्य	राजेश जोशी	राजकमल प्रकाशन	पहला संस्करण 2010
9.	कविता का अर्थात्	परमानंद श्रीवास्तव	वाणी प्रकाशन	प्रथम वाणी संस्करण 2008
10.	आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्बविधान	डॉ० केदारनाथ सिंह	राधाकृष्ण प्रकाशन	तीसरी आवृत्ति 2011
11.	समकालीन कविता की भूमिका	डॉ० मोहन	अनंग प्रकाशन	प्रथम संस्करण 2005
12.	समकालीन कविता के आयाम	पी0रवि	लोक भारती प्रकाशन	संस्करण 2013—14
13.	अन्तिम दशक की हिन्दी काविता	डॉ0 रविन्द्रनाथ मिश्र	लोक भरती प्रकाशन	संस्करण 2013—14
14.	काव्य की भूमिका	रामधारी सिंह दिनकर	लोक भारती प्रकाशन	संस्करण 2011
15.	हिन्दी काव्य का इतिहास	डॉ0 राम स्वरूप चतुर्वेदी	लोक भारती प्रकाशन	संस्करण 2011
16	नई कविता (सैद्धान्तिक पक्ष)	जगदीश गुप्त, विजय देव नारायण साही, राम स्वरूप चतुर्वेदी	लोक भारती प्रकाशन	संस्करण 2011

17.	नई कविता (विचार पक्ष)	जगदीश गुप्त, विजय देव नारायण साही, राम स्वरूप चतुर्वेदी	लोक भारती प्रकाशन	संस्करण 2011
18.	नई कविता (काव्य पक्ष)	जगदीश गुप्त, विजय देव नारायण साही, राम स्वरूप चतुर्वेदी	लोक भारती प्रकाशन	संस्करण 2011
19.	आधुनिक हिन्दी कविता	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	लोक भारती प्रकाशन	संस्करण 2011
20.	नई कविताऐं एक साक्ष्य	डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी	लोक भारती प्रकाशन	संस्करण 2011
21.	समकालीन हिन्दी कविता अन्तरंग परिचय	सी0एम0 योहान्नाह	लोक भारती प्रकाशन	संस्करण 2011
22.	हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी	नन्द दुलारे वाजपेयी	लोक भारती प्रकाशन	संस्करण 2010
23.	आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास	नन्द किशोर नवल	भारतीय ज्ञानपीठ	पहली आवृत्ति 2014
24.	कविता अभी बिल्कुल अभी	नन्द किशोर नवल	राजकमल प्रकाषन	पहला संस्करण 2014

पत्र पत्रिकाओं की सूची

क्र० सं०	पत्रिका	सम्पादक	प्रकाशन
1	वागर्थ, अंक 209	एकान्त श्रीवास्तव, कुसुम खेमानी	भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता
2	पहल 92	ज्ञानरंजन, राजकुमार	जबलपुर

		केसवानी	
3	आशय	वी०के० सौनकिया	दिगंत प्रकाशन कानपुर
4	शोधश्री (समकालीन–विमर्श)	प्रो० शर्मिला सक्सेना	दयालबाग़ आगरा
5	आलोचना	परमानन्द श्रीवास्तव	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
6.	समकालीन **जनमत** जुलाई–सितम्बर 2002	रामजी राय	पटना

षोध निर्देषक के मार्गदर्षन से इसमें उचित परिवर्तन सम्भव है।